अध्याय – 19
गायों एवं कुक्कुटों के रोग
(Diseases of Cattles & Poultry)

19.1. परिचय :

पशुपालक अपने जानवर के हावभाव देखकर तथा पशु की साधारण दशा को देखकर अन्दाज लगाता है कि पशु क चारा नहीं खाना, अकेले में रहना पसन्द करना, गति में अन्तर आना, तापक्रम में अन्तर आना, नाडी गति, श्वास की गति, आदि प्रमुख लक्षण है जो पशु के शुरूआती समय से ही बीमारी का पता लगाने में मदद करते हैं। पशु के पास पशु मालिक जाता है तो वह चौकन्ना हो जाता है तथा अपने कानों, आँखो एवं गर्दन के द्वारा हरकत में आ जाता है। बीमार होने की अवस्था में पशु का चौकन्नापन नहीं रहता है तथा वह अकेला रहना पसंद करता है। उसकी त्वचा तथा बाल सूखापन होने के कारण, रोम खड़े रहते हैं। बीमार जानवर को उसके शरीर का ताप मापकर, नाड़ी देखकर तथा पसलियों एवं कीखों की हरकत को देखकर पहचान की जा सकती है। विभिन्न पशुओं सामान्य श्वास, तापक्रम एवं नाडी की गति सारणी 19.1 में दी गई है। :

नाड़ी का सम्बन्ध पशु के रक्त संचरण से होता है। रक्त संचरण की गति हृदय द्वारा निर्धारित होती है। पशु के स्वास्थ्य का निर्णय करने के लिए उसके शरीर का तापक्रम, नाड़ी की गति, श्वास की गति आदि प्रमुख है जो पशु के प्रारंभिक स्वास्थ्य की जानकारी देते हैं।

19.2. पशु प्लेग रोग :

रोग के कारण :

लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान पशुपालक कर लेता है। रोग से पीडित पशु को 3–4 दिन तेज बुखार आता है। यह रोग प्रायः जिवाणुओं द्वारा फैलता है।

लक्षण :

(अ) गुहा, तथा मुहँ में मसूड़ों व जीभ पर छोटे–छोटे दाने उभरना।

(ब) जिनके फूटने पर बदबूदार छेरा चलता है,

(स) आँखों तथा नाक से गाढ़े द्रव का बहना इसके मुख्य लक्षण है जिनसे रोगी पशु की पहचान हो सकती हैं।

(द) इसमें पशु के शरीर का तापमान 105°F से 108°F तक रहता है तथा शरीर कांपने के कारण रोम खड़े हो जाते है।

रोग से बचाव :

रोग की रोकथाम उसके लक्षणों के अनुसार की जाती है। बीमार पशु के शरीर को गर्म रखना तथा तेज हवा व धूप से बचाना चाहिए। इस रोग की रोकथाम के लिए पशुओं के झुण्ड से रोगी पशुओं को अलग निकाल देना चाहिए तथा स्वस्थ पशुओं में रोग को फैलने से रोकने के लिए रेन्डरपेस्ट वैक्सीन का टीका लगवाना चाहिए। रोगी पशु मरने के उपरान्त उस जगह पर सूखा घास या तूड़ा जला कर या वहाँ की मिट्टी को खोदकर हटा देना उचित रहता है तथा स्वस्थ पशुओं को यहाँ नहीं बांधना चाहिए। गंभीरावस्था में पशु को निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह लेकर उपचार करवाना चाहिए।

19.3.लंगड़ा रोग/लंगड़ा बुखार :

लंगड़ा रोग के कारण :

यह रोग पशु के शरीर में जीवाणुओं द्वारा फैलता है। इस रोग से ग्रसित पशुओं के मसीले भागों में सूजन आकर पशुओं को बैचेन कर देती है जिससे पशु के शरीर का तापमान बढ जाता है।

लंगड़ा रोग के लक्षण :

(1) जांघों, कन्धों व गर्दन पर सूजन तथा दर्द अनुभव करता है।

सारणी 19.1. विभिन्न पशुओं के शरीर का ताप, नाड़ी की गति, श्वांस की गति

क्र.सं.	पशु का नाम	सामान्य शरीर का ताप डि.फा.	नाड़ी की गति प्रति मिनिट	श्वास की गति प्रति मिनिट
1.	गाय	91.5–103 °F	60–90	25–30
2.	भैंस	91–103 °F	70–100	25–35
3.	बैल	100–103 °F	40–60	15–30
4.	बकरी	102–104 °F	65–90	12–20
5.	भेड़	102–104.5 °F	65–85	10–20

(2) पशु को चलने में परेशानी आने के कारण, वह लंगडाकर चलता है

(3) शुरूआत में सूजन दर्द करती है तथा शरीर का तापमान एकदम गिरने से सूजन दर्द रहित हो जाती है। इन लक्षणों के अनुसार, इस रोग का मुख्य लक्षण मांसपेशियों में सूजन आकर पशु का फूल जाना है।

लंगड़ा रोग से बचाव :

इस रोग से पशुओं का बचाव करने के लिए पशुओं में टीकाकरण करवाना आवश्यक है। रोग ग्रसित क्षेत्रों में छः माह बाद पुनः टीका लगवाना चाहिए। यह टीका पशुपालन विभाग द्वारा निःशुल्क उपलब्ध करवाया जाता है।

19.4. खुरपका तथा मुहंपका रोग :

खुरपका तथा मुहंपका रोग के कारण :

(1) यह बीमारी एक वायरल रोग है जो सात प्रकार के विषाणुओं द्वारा फैलती है। सातों प्रकार के विषाणुओं एक ही तरह के लक्षण उत्पन्न करते हैं किन्तु अपनी बनावट में अलग–अलग होते हैं।

(2) यही कारण है कि एक प्रकार के विषाणु के आक्रमण से ठीक हुआ पशु पुनः दूसरे प्रकार के विषाणुओं से बीमार हो सकता है।

खुरपका तथा मुहंपका रोग के लक्षण :

(1) इस रोग से पीडित पशु को जाडा लगकर 105–107°F तक बुखार आना।

(2) पशु जुगाली करना एवं खाना पीना बन्द कर देता है।

(3) झुण्ड से अलग नीचे गर्दन करके खडा रहता है।

(4) रोगी पशु के मुँह से चिपचिपाहट की आवाज आना तथा लार छूटना, पशु का सुस्त हो जाना

(5) दूध देने वाले जानवरों में दूध की मात्रा में कमी आना।

(6) रोगग्रस्त पशु के होंठ, तालु की श्लेष्मा झिल्ली, जीभ तथा नथनों में छाले उत्पन्न होना। इन छालों में भूरे रंग का तरल भरा दिखाई पडता है तथा छाले फूटने पर लाल घाव के समान नजर आते हैं। जीभ पर छाले बडे होने के कारण पशु बार–बार जीभ निकालता है तथा लार निकलती रहती है।

खुरपका तथा मुहंपका रोग के बचाव :

(1) पशु के मुँह में छाले दिखाई देने पर इन छालों को कीटाणुनाशक दवा जैसे पोटाश, सुहागा, फिटकरी, बोरिक अम्ल में से जो भी उपलब्ध हो, का घोल बनाकर धोना चाहिए।

(2) छाले पर चार भाग शहद में एक भाग सुहागा मिलाकर लेप करना।

(3) पैरों के छालों को साफ कर तीन चार बार कीटाणुनाशक दवा लगाना। (बोरिक अम्ल/जिंक ऑक्साइड)

(4) रोगी पशु को खाने के लिए हरी घास, दलिया तथा चावल का माण्ड देना चाहिए, जिससे छालों में घाव नही बढें।

खुरपका तथा मुहंपका रोग की रोकथाम :

(1) स्वस्थ पशुओं को रोगी पशुओ से अलग रखा जाना जरूरी हो जाता है जिससे रोग दूसरे जानवरों में नही फैलें।

(2) पशुओं को फुट बाथ से गुजारा जाना चाहिए जिसमें 1 प्रतिशत फिनायल घोल भर दिया जाता है जिससे रोग को फैलने से रोका जा सकें।

(3) प्रत्येक पशु को इस रोग के टीके लगवाना आवश्यक है।

(4) इस रोग के टीके पशुपालन विभाग द्वारा रियायती दरों पर उपलब्ध करवाया जाता है।

(5) दो टीकाकरणों के मध्यांतराल छः माह का होना आवश्यक है।

19.5. थनैला रोग :

थनैला रोग के कारण :

(1) इस रोग का प्रकोप बच्चा होने के तुरन्त बाद ज्यादा होता है।

(2) फिर भी इसका प्रकोप पशुओं में कभी भी हो सकता है। यह रोग दूध देने वाले जानवरों तक ही सीमित है।

(3) इस रोग को पहचानना कठिन है किन्तु दूध में पहले छोटे छोटे फुटक आते हैं तथा दूध पतला हो जाता है। ये फुटक धीरे–धीरे बढ़ जाते है। यह अवस्था कई दिनों तक चलती है

थनैला रोग के लक्षण :

(1) शरीर का तापक्रम एकदम से बढता है तथा पशु चारा खाना कम कर देता है।

(2) रोगी पशु का अयन गर्म तथा लाल हो जाता है इसको छूने पर दर्द अनुभव करता है।

(3) रोगी पशु को बैचेनी महसूस होती है।

(3) रोगी पशु के शरीर का तापमान एकाएक गिर जाता है तथा शरीर ठण्डा पड़ जाता है जिससे अयन नीला हो जाता है।

(4) थनों में सूजन आना, छूने पर गर्म अनुभव होना तथा पशु को कष्ट होने लगता है। अन्त में दूध के साथ

रक्त भी आ सकता है तथा दूध निकलना बन्द हो जाता है।

(5) दूध में छिछड़े तथा एपीथिलियल कोशिकाऐं मिलती है।

थनैला रोग की रोकथाम :

(1) रोग अधिकतर कुप्रबन्धन से होता है। अतः पशुपालक को हाथ, कपड़ों, दूध निकालने के बर्तन, पशुशाला तथा अयन की स्वच्छता पर ध्यान देकर इस रोग से पशु को बचा सकता है।

(2) थन अथवा अयन पर लगी चोटों का शीघ्रताशीघ्र उपचार करना।

(3) लाल दवा से अयन तथा पशुपालक के हाथ दूध निकालने से पहले साफ करना।

रोग के निदान के लिए समय पर पशु चिकित्सक से सम्पर्क किया जाना उचित माना गया है।

19.6. खूनी दस्त, प्रजीव रोग :

खूनी दस्त, प्रजीव रोग के कारण :

(1) रोग के प्रारंभिक स्तर पर पशु सुस्त रहता है तथा गोबर पतला करता है। गोबर के साथ साथ कभी खून आना भी चालू हो सकता है।

(2) यह रोग जीवाणुओं के द्वारा फैलता है।

खूनी दस्त, प्रजीव रोग के लक्षण :

(1) पशु के गोबर के साथ खून आना।

(2) ऐठन के साथ दस्त लगना।

(3) बीमार पशु के अधिक जोर लगाने पर रेक्टम भी बाहर आना।

(4) रोगी पशु में बैचेनी तथा पानी की प्यास अधिक बढ़ना।

(5) चारा कम खाना तथा पशु के शरीर में कमजोरी आना। किन्तु शरीर का तापक्रम नहीं बढता है।

खूनी दस्त, प्रजीव रोग के बचाव :

(1) रोगग्रस्त पशु को चावल के माण्ड के साथ 10–15 ग्राम सौंफ, बैलगिरी (सुखी हुई) तथा जीरे को पीसकर पिलाना।

(2) क्लोरोडीन 200 ग्राम, फीनोल 10ml तथा दलिया 500gm. को मिलाकर दिन में 2–3 बार देना।

(3) रोगी पशु के शरीर में पानी की कमी को ध्यान में रखते हुऐ डिहाइड्रेशन रोकने के लिए 1000 से 2000 मिली लीटर का 5 प्रतिशत ग्लूकोज घोल दिया जाना।

19.7. गल घोटू रोग :

गल घोटू रोग के कारणः

(1) जानवरों में यह रोग जीवाणुओं के कारण फैलता है।

(2) जिनकी भिन्न–भिन्न अवस्थाऐं हो सकती हैं।

(3) रोग के लक्षण प्रकट होने पर रोगी पशु कम ही जीवित रह पाते हैं।

गल घोटू रोग के लक्षण :

(1) पशु के शरीर का तापक्रम अचानक 107–108°F पहुँचना।

(2) पशु अपना खान–पान बन्द कर देता है।

(3) रोगी पशु में पहले कब्ज तथा इसके बाद गोबर के साथ खून एवं आव आना।

(4) पेट में ऐंठन होने के कारण रोगी पशु का चिल्लाना।

(5) रोग ग्रस्त पशु का तेज बुखार के साथ कंठों तथा निचले जबडे में सूजन आना जीभ की सूजन बढ़ जाना।

(6) सूजन के कारण रोगी पशु को श्वास लेने में परेशानी आती है एवं पशु बैचेनी महसूस करता है। जीभ तथा गले की सूजन बढने के कारण पशु का दम घुटने लगता है तथा खरड – खरड की आवाज आती है नथुने फूल जाते हैं एवं जानवर जमीन पर लेट जाता है इस तरह गम्भीर अवस्था में 12–36 घण्टे में पशु दम तोड सकता है।

गल घोटू रोग की रोकथाम :

(1) वर्षा ऋतु के प्रारंभ में ही इस रोग से बचाव के लिए पशुओं में कमपोजिट ब्रोथ वैक्सीन के टीके लगवाना।

(2) टीकाकरण पशु के भार के अनुरूप किया जाना।

(3) रोग पशुओं में फैल रहा है तो स्वस्थ पशुओं को सबक्यूटेनियस टीका दिया जाना।

(4) रोग के अधिक फैलने पर छः माह बाद पुनः टीकाकरण करना। यह टीका पशुपालन विभाग में निःशुल्क मिलता है।

19.8. मुर्गियों का रानीखेत रोग :

मुर्गियों का रानीखेत रोग के कारण :

(1) यह रोग सभी आयु के पक्षियों में हो सकता है। छोटी आयु के चुजो (3–4 सप्ताह) में श्वांस

सम्बन्धित लक्षण जैसे खांसी आना, छींक आना, दम का फूलना।

(2) यह रोग पक्षियों में जीवाणुओं के द्वारा उत्पन्न होता है।

मुर्गियों का रानीखेत रोग के लक्षण :

(1) इस रोग से चूजे का सुस्त, उदास एवं कमजोर होना।

(2) कभी कभी लक्षणों को प्रकट किये बिना भी मृत्यु हो जाना।

(3) इस रोग से पीड़ित चूजों/मुर्गियों का गर्दन को पीठ पर रख कर बैठना, हरे या पीले रंग के बदबूदार दस्त लगना, चलते समय चक्कर काटना, लंगडाते हुए चलना इस रोग के प्रमुख लक्षणों में आते हैं।

मुर्गियों का रानीखेत रोग के बचाव :

(1) इस रोग से बचाव के लिए चूजों एवं मुर्गियों में प्रोफाइलेक्टिक वेक्सीन हर वर्ष लगवाते रहना चाहिए।

(2) यह टीका चूजों में 4–6 सप्ताह की आयु मे लगा दिया जाना चाहिए। टीका लगने के बाद, इस रोग से पीडित होने की सम्भावनाऐं कम हो जाती है।

(3) इस बीमारी का प्रभावी उपाय टीकाकरण माना गया है तथा मुर्गियों के आवास को साफ सुथरा रख कर इस रोग से बचाव करना।

(4) जिन मुर्गियों में इस रोग के लक्षण उभरते हों उन्हे अलग रखना।

मुर्गियों का रानीखेत रोग की रोकथाम :

(1) कुक्कुट फार्म मुख्य सड़क से थोडा दूर होना चाहिए।

(2) नई खरीदी गई मुर्गियों को कम से कम 10–15 दिन तक झुण्ड से अलग रखना चाहिए।

(3) कुक्कुट घर की वर्ष में एक बार पुताई कर उसमें कीटाणुनाशक के रूप मे चुना (बुझा हुआ) मिला दिया जाना उचित रहता है।

19.9. कुक्कुट चेचक रोग :

कुक्कुट चेचक रोग के कारण :

(1) यह रोग विषाणुओं द्वारा फैलता है।

(2) मुर्गियों में यह संक्रामक रोग सभी अवस्थाओं में फैल सकता है।

(3) त्वचा की पपडी में इस रोग के विषाणुओं का लम्बे समय तक रहना।

(4) इस रोग का प्रकोप शरद ऋतु में अधिक देखने को मिलता है क्योंकि विषाणु ठण्ड में अधिक वृद्धि करता है। इस रोग की कई अवस्थाएं होती है।

कुक्कुट चेचक रोग के लक्षण :

(1) इस रोग से ग्रसित मुर्गियों में अण्डे देने की क्षमता कम होना।

(2) गलचर्म और चेहरे पर फफोले (छाले) बनकर सूख जाने पर मस्से का रूप धारण करना।

(3) मुहँ तथा गले के अन्दर की झिल्ली पर हल्के पीले रंग के छाले उभरना।

(4) इस रोग के कारण मुर्गियों को श्वांस लेने में, पानी पीने तथा खाने में कठिनाई उत्पन्न होना।

(5) इन सूखी पपडियों को उखाड कर देखने पर लाल रंग के निशान दिखाई देते हैं।

(6) आँखों से पानी बहना, आँखो की भौंहे सूजना, जिन पर छाले होने के कारण सूजन आती है। ये छाले आँखो के अन्दर तक फैल जाने से कुक्कुट अन्धे हो जाते है। आँखो में पीले रंग का गाढ़ा द्रव सख्त होकर जमा हो जाता है जिससे मुर्गियों का अन्धा होना।

कुक्कुट चेचक रोग की रोकथाम :

(1) इस रोग की चिकित्सा प्रणाली भी प्रभावशाली नहीं है। अतः देखभाल करना ही उचित माना गया है।

(2) टीकाकरण इस रोग के बचाव का थोडा प्रभावी उपाय अवश्य है। टीकाकरण 3–4 सप्ताह की आयु के कुक्कुटों में किया जाना।

(3) कुक्कुटों की हर आयु वर्ग के पक्षियों में पिजनपोक्स वेक्सीन का उपयोग लाभकारी माना गया है।

सारांश

पशु के शारीरिक परिदृश्य को देख कर पशुपालक रोगी पशु की झुण्ड में पहचान, उसके प्रारम्भिक लक्षणों के आधार पर करता है। पशुओं में शरीर का सामान्य तापमान 91^0F से 103^0F हो सकता है। पशु प्लेग में सल्फा मेथेथीन

सोडियम इन्जेक्शन दिये जाते हैं। लंगडी रोग में शरीर का तापमान 107^0F-108^0F रहता है तथा जांघों, गर्दन, पैरों में सूजन आ जाती है। इसकी रोकथाम में 10 सी.सी. पेनिसिलीन का उपयोग किया जाता है। थनैला रोग की रोकथाम के लिए एक्रिफ्लोविन का उपयोग करते हैं। मुर्गियों में रानीखेत रोग से बचाव के लिए प्रोफाइलेक्सिक वेक्सिन का उपयोग प्रति वर्ष किया जाता है।

प्रश्न :

1. खुर एवं मुँह पक्का रोग में तापमान रहता है :
   (अ) 107^0F (ब) 102^0F
   (स) 110^0F (द) कोई भी नहीं।
2. थनैला रोग में मेडीसिन का उपयोग किया जाता है :
   (अ) पेनिसिलीन (ब) एक्रिफ्लोविन
   (स) फिटकरी (द) सल्फा
3. रानीखेत रोग फैलता है :
   (अ) गाय (ब) भैंस
   (स) मुर्गी (द) बकरी
4. कुक्कुट चेचक रोग की रोकथाम के लिए उपयोग लेते हैं :
   (अ) पिजन पोक्स वेक्सीन
   (ब) पेनिसिलिन
   (स) एनासीन
   (द) एक्रिफ्लोविन
5. पशुओं में रोग के सामान्य लक्षण क्या है? पशुओं में कौन–कौन सी बीमारियां फैलती है? इनके लक्षण क्या है?
6. पशुओं में फैलने वाले रोगों की रोकथाम कैसे–कैसे करेंगे।
7. मुर्गियों के रोगों के लक्षण एवं रोकथाम को सविस्तार समझाइए।